ध्यान फल

किसी भी कार्य को करने के पीछे एक कारण होता है। उस कार्य के द्वारा जो लाभ हम पाना चाहते हैं, वही उस काम का कारण होता है।

प्रत्येक कार्य का एक फल होता है। बुरे कार्य का बुरा फल और अच्छे कार्य का अच्छा फल मिलता है। सुन्दर फूल और मीठे फलों से युक्त बगीचे देखने में किसे सुन्दर नहीं लगते! परंतु ध्यान फूल और फल रहित जीवन जीवशक्ति विहीन रहता है। ध्यान साधना के द्वारा पाया जाने वाला फल ही दिव्य फल है। श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन से इसी ध्यान फल को पाने की बात कही है–'तस्मात् योगी भवार्जुन।' हमें उनकी इस आज्ञा का पालन करना है।

आनापानसति–विपस्सना ध्यान रीति का प्रचार करना ही पिरामिड स्पिरिचुअल सोसायटी का परम उद्देश्य है। दुख राहित्य और जन्म राहित्य ही ध्यान के फल हैं।

संगीत साधना के बिना संगीत का फल नहीं मिलता।

वाणिज्य साधना के बिना वाणिज्य का फल नहीं मिलता।

इसी तरह ध्यान साधना के बिना ध्यान फल नहीं मिलता।

ध्यान–भोज के लिए सभी मुमुक्षु आ सकते हैं।

उनके लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं है।

बच्चे–बड़े–बूढ़े सभी का स्वागत है।

तरह तरह के फल और विविध स्वाद, नई अनुभूतियाँ–कोई भी पा सकता है।

अब हम बातें छोड़कर काम शुरू करेंगे। हम सब आँखें बंद करके साँस पर ध्यान देंगे।